लापुंग प्रखण्ड में ग्रामीण विकास: एक भौगोलिक अध्ययन

भूगोल विषय में पीएच० डी० उपाधि हेतु

शोध प्रारूप

स्नातकोत्तर भूगोल विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निर्देशक

डॉ० जी० के० सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

यूनिवर्सिटी डिपार्टमेंट ऑफ ज्यॉग्राफी

राँची यूनिवर्सिटी, राँची

शोधकर्त्ता

समीर कुमार नन्द

स्नातकोत्तर (भूगोल विषय),
यू०जी०सी० नेट

सहायक शिक्षक
राज्य सम्पोषित उच्च विद्यालय,
ककरिया, लापुंगए राँची।

1. शोधकर्ता का नाम एवं पता(वर्तमान और स्थायी पता):-

समीर कुमार नन्द

स्नातकोत्तर (भूगोल विषय), यू०जी०सी० नेट

विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची

वर्तमान पता-

नाम- समीर कुमार नन्द

पता- पहान टोली, न्यू अंचल कार्यालय हेहल के पास

पोस्ट- हेहल, थाना- रातु, जिला- रांची,

झारखण्ड, 834005

स्थायी पता-

नाम- समीर कुमार नन्द

पिता- निलाम्बर नन्द

ग्राम- सापुकेरा, पोस्ट- लापुँग, जिला- रांची,

झारखण्ड, 835234

2. शोध निर्देशक का नाम:-

डॉ० जी० के० सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

यूनिवर्सिटी डिपार्टमेंट ऑफ ज्यॉग्रोफी

रॉंची यूनिवर्सिटी, रॉंची

3. शोध शीर्षक :-

लापुँग प्रखण्ड में ग्रामीण विकास : एक भौगोलिक अध्ययन।

1. अद्यतन स्थितिः-

मानव की आधारभूत आवश्यकताओं में से निवास गृह एक है जिसके समूहन से ही बस्ती या अधिवास का उद्भव होता है। सामान्यतः अधिवास गृहों का समूह होता है। ए0 एन0 क्लार्क के शब्दों में– ''मानव निवास का कोई स्वरूप यहाँ तक कि एकल गृह भी अधिवास हो सकता है यद्यपि यह शब्दावली प्रायः गृह समूह के लिए प्रयुक्त होता है।'' कार्यात्मक विशिष्टिता के आधार पर अधिवासों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता हैः– 1, ग्रामीण अधिवास एवं 2, नगरीय अधिवास।

वैसे अधिवासित क्षेत्र जिसकी अधिकांश जनसंख्या द्वितीयक, तृतीयक और चतुर्थक कार्यों में सलग्न पायी जाती है नगरीय अधिवास कहलाती है। वहीं ग्रामीण अधिवास ऐसे क्षेत्र होते है जिसकी अधिकांश जनसंख्या प्राथमिक कार्यों में संलग्न होती है। प्राथमिक क्रियाएँ प्रकृति तथा भूमि से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होती है जैसे आखेट, मत्स्य पालन, कृषि, पशुपालन, बगवानी, खनन आदि। अतः कृषि, पशुपालन आदि प्राथमिक कार्यों की प्रमुखता वाले अधिवासों को ग्रामीण अधिवास की संज्ञा दी जाती है। प्राथमिक कार्यों के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता होती है जबकि इनसे सम्बन्ध लोग आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से सामन्यता पिछड़े होते है और इनका सामान्य जीवन स्तर प्रायः निम्न रहता है।

ग्रामीण विकास पर चर्चा करने से पूर्व विकास का तात्पर्य समझना आवश्यक है। विकास की वर्तमान संकल्पना मानव कल्याण से सम्बन्धित है विकास का तात्पर्य केवल सड़कें, मकान और कृषि उत्पादन में वृद्धि नहीं है बल्कि इसके अन्तर्गत सामाजिक, सांस्कृतिक, मानवीय और आर्थिक आयाम में सकारात्मक, गुणात्मक परिवर्तन को समाहित किया जाना है। जाति, धर्म, संप्रदाय के भेदभाव से परे संसाधनों और अवसरों के समान वितरण के साथ ही क्षेत्रीय और सामाजिक न्याय को प्राप्त करने के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि, अतिरिक्त आय के अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, आवास और मानव कल्याण की सुविधाओं में वृद्धि और सुधार जैसे घटक भी वर्तमान विकास की संकल्पना में सन्निहित है। इस प्रकार मानव विकास, स्वास्थ्य, भौतिक पर्यावरण से लेकर आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक स्वतंत्रता तक सभी प्रकार के मानव विकल्पों को सम्मिलित करते हुए लोगों के विकल्पों में विस्तार और उनके शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तथा सशक्तीकरण के अवसरों में वृद्धि की प्रक्रिया है।

अतः ग्रामीण विकास का तात्पर्य ग्रामीण जीवन स्तर के गुणवत्ता में सकारात्मक परिवर्तन से है। ग्रामिण विकास शब्द ग्रामीणों का जीवन स्तर सुधारने के साथ ग्रामीण क्षेत्र के समग्र विकास को प्रदर्शित करता है। इस अर्थ में, यह व्यापक एवं बहुआयामीय संकल्पना है जिसका विश्लेषण दो दृष्टिकोणों के आधार पर किया गया हैः संकुचित एवं व्यापक दृष्टिकोण। संकुचित दृष्टि से

ग्रामीण विकास का अभिप्राय है विविध कार्यक्रमों, जैसे– कृषि, पशुपालन, ग्रामीण हस्तकला एवं उद्योग, ग्रामीण मूल संरचना में बदलाव, आदि के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करना। व्यापक दृष्टिकोण से ग्रामीण विकास का अर्थ है ग्रामीणों के जीवन में सकारात्मक एवं गुणात्मक उन्नति हेतु सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, प्रौद्योगिक एवं संरचनात्मक परिवर्तन लाना। विभिन्न विद्वानों ने ग्रामीण विकास को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किये हैः– जॉन हैरिस (1986) के अनुसार :– ''ग्रामीण विकास एक नीति एवं प्रक्रिया है जिसका आविर्भाव विश्वबैंक एवं संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं की नियोजित विकास की नयी रणनीति के विशेष परिप्रेक्ष्य में हुआ है।'' कॉप (1992) के अनुसार :– ''ग्रामीण विकास को एक प्रक्रिया बताया जिसका उद्देश्य सामूहिक प्रयासों के माध्यम से नगरीय क्षेत्र के बाहर रहने वाले व्यक्तियों के जनजीवन को सुधारना एवं स्वावलम्बी बनाना है।'' विश्व बैंक (1975) के अनुसार :– ''सामान्य रूप से ग्रामीण विकास, एक ग्रामीण परिवेश वाले लोगों के आर्थिक और सामाजिक जीवन को बेहतर बनाने के लिए, बनाई गई रणनीति है। जो विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले गरीबों, छोटे व सीमांत किसानों और भूमिहीन मजदूरों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है।'' बसन्त देसाई (1988) के अनुसार :– '' ग्रामीण विकास एक अभिगम है जिसके द्वारा ग्रामीण जनसंख्या के जीवन की गुणवत्ता में उन्नयन हेतु क्षेत्रीय स्त्रोतों के बेहतर उपयोग एवं संरचनात्मक सुविधाओं के निर्माण के आधार पर उनका सामाजिक आर्थिक विकास किया जाता है एवं उनके नियोजन एवं आय के अवसरों को बढ़ाने के प्रयास किये जाते है।'' मिचेल टोडारो :– की दृष्टि में ग्रामीण विकास में निम्न कार्य आते हैंः–1 रहन–सहन के स्तर में उन्नति अर्थात रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषाहार, मकान की सुविधाएं और अनके प्रकार की सामाजिक सेवाये आती है। 2 ग्रामीण आय के वितरण की असमानता का कम करना व ग्रामीण और शहरी आय और आर्थिक अवसरों में असमानता को दूर करना। इस प्रकार वर्णित परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि ग्रामिण विकास एक विस्तृत एवं बहुआयामी संकल्पना है जो ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक आयामों में सकारात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन को इंगित करता है।

<u>साहित्य समीक्षा</u> शोध विषय के महत्व को उजागर करती है साथ ही अध्ययन क्षेत्र में इसकी सार्थकता को स्पष्ट करती है। वास्तव में यह शोध कार्य के लिए स्त्रोत एवं मार्गदर्शन दोनो का कार्य करती है। इसलिए साहित्य समीक्षा को शोध का अभिन्न अंग माना गया है। मेरे शोध विषय से सम्बन्धित कार्य पूर्व में कई विद्वानों, शोधकर्ताओं एवं संस्थानों द्वारा किए गए हैं जो वर्तमान में विभिन्न साहित्यों, लेखों एवं प्रतिवेदनों के रूप में मौजूद हैं। जिनकी चर्चा मैं संक्षेप में निम्नवत कर रहा हूँः– इकबाल सिंह (1986) ने अपनी पुस्तक **'भारत में ग्रामीण विकास'** में ग्रामीण विकास के विभिन्न पक्षों जैसे कृषि एवं कृषि उत्पादकता, भू–धारण पद्धति, साख का महत्व, सामुदायिक विकास, ग्रामीण औद्योगिकरण एवं रोजगार आदि पर अध्ययन प्रस्तुत किया है। कटार सिंह (2011):– इन्होंने अपनी पुस्तक **'ग्रामीण विकासः सिद्धांत, नीतियां**

एवं प्रबन्धन' में ग्रामीण विकास का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके सिद्धांतों चर्चा की है। ग्रामीण विकास से सम्बन्धित नीतियों एवं नीति प्रतिमानों पर प्रकाश डाला है साथ ही ग्रामीण विकास के लिए आवश्यक नियोजन विधियों एवं वित्तपोषण की आवश्यकताओं को समझाया है। सुनील कुमार सिंह (2006) :– इन्होंने अपनी पुस्तक **'झारखण्ड की विकास यात्रा'** में झारखण्ड के अलग राज्य के रूप में स्थापित होने के उपरांत की उपलब्धियों और वर्तमान स्थितियों से सजग कराते हुए ग्रामीण विकास के लिए चल रहीं विभिन्न योजनाओं से अवगत कराया है। वी0 के0 श्रीवास्तव, डॉ0 नन्देश्वर शर्मा एवं डॉ0 पी0 आर0 चौहाान (2008) **:–** इन्होने अपनी पुस्तक **'प्रादेशिक नियोजन और संतुलित विकास'** में प्रादेशिक नियोजन एवं आर्थिक विकास के विभिन्न संकल्पनात्मक पक्षों पर दृष्टि डाला है। भारत के नियोजन प्रदेशों की व्याख्या करते हुए बहुस्तरीय नियोजन की आवश्यकता को उजागर किया है। जिले सिंह (2016) ने अपनी पुस्तक **'ग्रामीण विकास की चुनौतियों'** में कृषि, रोजगार, व्यवसाय, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से सम्बन्धीत चुन्नौतियों के विषय में विचार व्यक्त किया है। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा जारी **2020–21 के वार्षिक रिपार्ट** में ग्रामीण आधारभूत संरचनाओं के महत्व तथा वित्तपोषण, ग्रामीण वित्तीय संस्थाओं का सशक्तीकरण ग्रामीण क्षेत्रों के डिजीटलीकरण आदि विभिन्न बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया है।

2. शोध समस्या :-

किसी भी शैक्षिक शोध की शुरूआत शोध समस्या की स्पष्ट पहचान के साथ होती है । शोध समस्या को परिभाषित करते हुए करलिंगर ने कहा है कि शोध समस्या एक ऐसा प्रश्नवाचक वाक्य या कथन होता है जो दो या दो से अधिक चरों के बीच कैसा सम्बन्ध है देखता है। स्पष्ट है कि शोध समस्या से अभिप्राय ऐसे प्रश्नवाचक कथन से है जिसमें चरों के बीच कोई विशेष प्रकार के सम्बन्ध होने की कल्पना की जाती है। वास्ताव में शोध समस्या में प्रस्तुत प्रश्न शोध की आत्मा होती है जो शोध को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है। ये प्रश्न उन विचारों की ओर प्रकाश डालते है जिनका खोज करना उद्देश्य बन जाता है।

ग्राम एक अधिवास इकाई है जिसे मानव बसाव प्रक्रिया के लिए प्रयोग करता है यहाँ प्राथमिक प्रक्रियाओं की प्रधानता पायी जाती है जो प्रकृति या भूमि से प्रत्यक्षतः सम्बन्धित होते है, कृषि, पशुओं का शिकार करना, मछली पकड़ाना, बागवानी, खनन आदि कार्य प्राथमिक कार्य के अन्तर्गत आते है। प्राथमिक कार्यो में संलग्न लोग सामान्यतः आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक

दृष्टि से पिछड़े हुए होते है और उनका सामान्य जीवन स्तर भी अपेक्षाकृत निम्न पाया जाता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ की 68.9% जनसंख्या गांवों में निवास करती है विश्व के प्रायः सभी देशों में ग्रामीण समाज एवं अर्थव्यवस्था नगर की तुलना में पिछड़ी हुई होती है किन्तु विकासशील देशों में आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में पिछड़ेपन के कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ इतनी विकराल और जटिल रूप में पायी है कि उनका समाधान करना देश के समक्ष चुनौति बन जाता है। लापुँग प्रखण्ड अनेक सामाजिक आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त है जिनमें निर्धनता, बेरोजगारी, अशिक्षा, आवास, यातायात, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि सुविधाओं की कमी सामाजिक कुरितियाँ आदि प्रमुख है। प्रारम्भिक अध्ययनों के आधार पर एवं साहित्यिक समीक्षाओं के उपरांत अपने शोध शीर्षक **"लापुँग प्रखण्ड में ग्रामीण विकास : एक भौगोलिक अध्ययन"** के अन्तर्गत निम्नलिखित शोध समस्याएँ निर्धारित करता हूँः–

- सामाजिक–आर्थिक तत्वों के विकास का ग्रामीण जीवन स्तर पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
- लापुँग प्रखण्ड में कृषि की समस्याएँ और सम्भावनाएँ क्या हैं ?
- लापुँग प्रखण्ड में आधारभूत संरचनाओं के विकास द्वारा ग्रामिण विकास को किस प्रकार गति प्रदान की जा सकती है ?
- सरकार द्वारा निर्मित और क्रियान्वित नीतियाँ लापुँग प्रखण्ड में ग्रामीण विकास को किस सीमा तक प्रभावित की हैं ?
- ग्रामीण विकास किस तरह एक सशक्त लोकतंत्र की स्थापना कर सकता है?

3. शोध का उद्देश्य एवं प्रेरणाः–

- लापुंग प्रखण्ड के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक पृष्टभूमि का अध्ययन करना।
- केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा चलायी जा रही ग्रामीण विकास योजनाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।
- लापुंग प्रखण्ड के ग्रामिणों के सामाजिक–आर्थिक उत्थान का पता लगाना।
- बीते दशकों में आए अवसंरचनात्मक परिवर्तनों का पता लगाना।
- लापुंग प्रखण्ड में भूमि उपयोग तथा कृषि क्षेत्र में आए बदलावों का अध्ययन कर समस्याओं और सम्भावनाओं का पता लगाना।
- लापुंग प्रखण्ड में ग्रामीण विकास की समस्याओं का पता लगाना एवं निराकरण के मार्ग सुझाना।

लपुंग प्रखण्ड एक ग्रामीण विशेषताओं वाला क्षेत्र है तथ विविध आवश्यकताओं एवं समस्याओं से जूझ रहा है। मैं इस क्षेत्र का स्थायी निवासी हूँ और मेरा बचपन इस क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक कमियों से जूझते हुए गुजरा है अतः मैं जब स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहा था और विविध सर्वेक्षण का हिस्सा बन रहा था तभी से मेरे मन में मेरे क्षेत्र के उत्थान के प्रति किसी प्रकार का कार्य कर सकूँ की इच्छा थी। जब मैनें भूगोल विषय से शोध करने का निर्णय लिया तो प्रादेशिक नियोजन के अन्तर्गत ग्रामीण विकास के प्रति मेरी रूचि बढ़ी। आगे मैनें कई विद्वानों का ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में पुस्तकों एवं लेखों को पढ़ा। जिससे मुझे अपने क्षेत्र के ग्रामीण विकास हेतु कार्य करने की और अधिक प्रेरणा मिली।

वास्तव में ग्रामीण विकास अनुसंधान के लिए प्रेरणा बहुआयामी है। सामान्यतया ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं तक सीमित पहुँच देखी जाती है जो आर्थिक विकास को बाधित कर देती है विभिन्न पर्यावरणीय खतरे जैसे सूखा, बाढ़, मृदा कटाव आदि कृषि उत्पादकता और खाद्य सुरक्षा को हानि पहुँचाते हैं साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी, अशिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच तथा रोजगार के अपर्याप्त अवसर इन्हें सामाजिक–आर्थिक हाशिये में डालने का कारण बनते हैं।

इस प्रकार ग्रामीण समुदायों के सामने आने वाले मुद्दों और चुनौतियों को समझना और उनका विश्लेषण करना और उन रणनीतियों और नीतियों की पहचान करना जो उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सके इस अनुसंधान की मुख्य प्रेरणा है।

4. परिकल्पना:-

करलिंगर के अनुसार– परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के बीच सम्बन्ध का अनुमानात्मक कथन है। साधारण अर्थो में वास्तविक अध्ययन आरम्भ करने के पहले शोधकर्ता अनुमान लगाता है कि अध्ययन के बाद किस तरह का परिणाम मिलेगा उसी अनुमान को परिकल्पना कहते है। परिकल्पना एक अनुमानित प्रस्ताव, अभिधारण या कथन है जिसमें दो या दो से अधिक चरों के बीच सम्बन्ध का उल्लेख किया जाता है।

- ग्रामीण विकास, सामाजिक–आर्थिक उत्थान पर निर्भर करता है।
- अवस्थापनात्मक तत्वों के विकास से ग्रामीण विकास को गति मिलती है।
- ग्रामीण विकास का निर्धनता उन्मूलन एवं महिला सशक्तिकरण से घनिष्ट सम्वन्ध है।

- विभिन्न सरकारी योजनाओं द्वारा ग्रामीण विकास में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
- ग्रामीण विकास राज्य के सम्पूर्ण विकास की कुंजी है।

5. शोध की रूपरेखा एवं शोध पद्धतिः-

क) क्षेत्र चयनः- प्रस्तुत शोध कार्य के लिए लापुँग प्रखण्ड को चुना गया है। लापुँग प्रखण्ड, राँची जिले के द0 प0 में स्थित है। यह शत प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या वाला क्षेत्र है तथा ग्रामीण क्षेत्र वाली विशेषताएँ रखता है जैसे प्रकृति पर अत्यधिक निर्भरता, निम्न उत्पादकता, गैर-लाभकारी जमीन एवं पशुधन की प्रधानता, अशिक्षित एवं अकुशल कार्यशक्ति की प्रचुरता, आधारभूत संरचना का अभाव आदि। लम्बे समय तक मूलभूत सुविधाओं से वंचित रहने के कारण यह क्षेत्र निर्धनता, बेरोजगारी, अशिक्षा व निम्न जीवन स्तर आदि सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन से ग्रसित रहा है। इन कारणों ने लापुँग प्रखण्ड के सन्दर्भ में ग्रामीण विकास के अध्ययन की सार्थकता को स्वयं स्पष्ट कर दिया है।

लापुँग प्रखण्ड, रांची जिले के द0 प0 में स्थित शत-प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या वाला क्षेत्र है। यह **23^{0} उत्तरी अंक्षाश से $23^{0}15'$ उत्तरी अक्षांश तथा $84^{0}52'$ पूर्वी देशांतर से $85^{0}06'$ पूर्वी देशांतर के बीच कुल 300.88 वर्ग किमी** में फैला हुआ है। इस प्रखण्ड की पश्चिमी सीमा से होकर लोहागारा नदी तथा पूर्वी सीमा से कारो नदी प्रवाहित होती है। इसके पूर्व में खूँटी जिला का कर्रा प्रखण्ड, उत्तर में बेड़ो प्रखण्ड, पश्चिम तथा दक्षिण में गुमला जिले के क्रमशः भरनो तथा कमडरा प्रखण्ड स्थित हैं। लापुँग प्रखण्ड रांची पठार का भाग है जहाँ मूलतः आर्कियनकालीन चट्टानें पायी जाती है। सम्पूर्ण क्षेत्र उत्थित समप्राय मैदान के रूप में मिलता है जहां बीच-बीच में अवशिष्ट पहाड़ियां पायी जाती हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में टोंगरी के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र की औसत उँचाई 650 मीटर है।

लापुँग प्रखण्ड की जलवायु ऊष्ण कटिबंधीय मानसुनी प्रकार की है। औसत वार्षिक तापमान $25^{0}C$-$30^{0}C$ के लगभग पाया जाता है। वर्षा मुख्य रूप से मध्य जून से लेकर मध्य अक्टूबर तक होती है। औसत वार्षिक वर्षा 140-160cm के बीच होती है। इस क्षेत्र में उष्ण कटिबन्धीय आर्द्र पतझड़ वन पाया जाता है। मार्च के अंत एवं अप्रैल के प्रारम्भ में दो से तीन सप्ताह पतझड़ का मौसम होता है। साल सबसे प्रमुख वृक्ष है जिसकी सघनता एवं उँचाई अधिक मिलती है। सागवान, गम्हार, शीशम, करंज, कुसुम आदि अन्य प्रमुख वृक्ष है। कटहल, आम, जामुन, पियार आदि कुछ सदाबहार वृक्ष भी पाए जाते है।

LOCATION MAP OF STUDY AREA LAPUNG BLOCK

INDIA

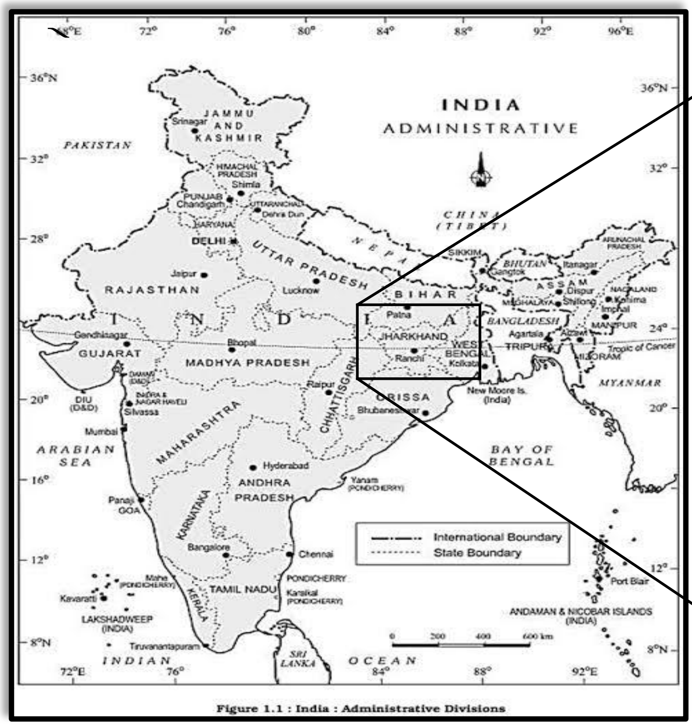

JHARKHAND

$83^{0}19'50''E$ $87^{0}57'E$

$25^{0}19'15''N$

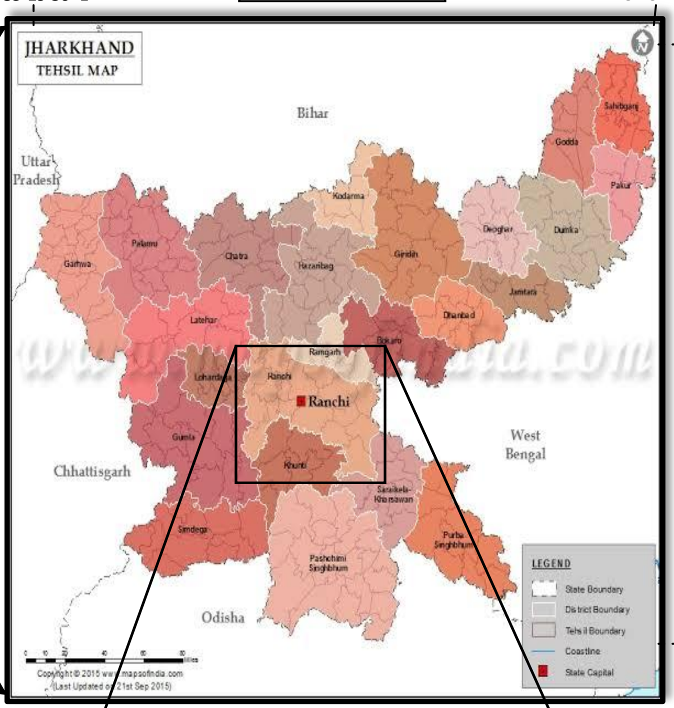

$21^{0}58'10''N$

LAPUNG BLOCK

$23^{0}15'N$

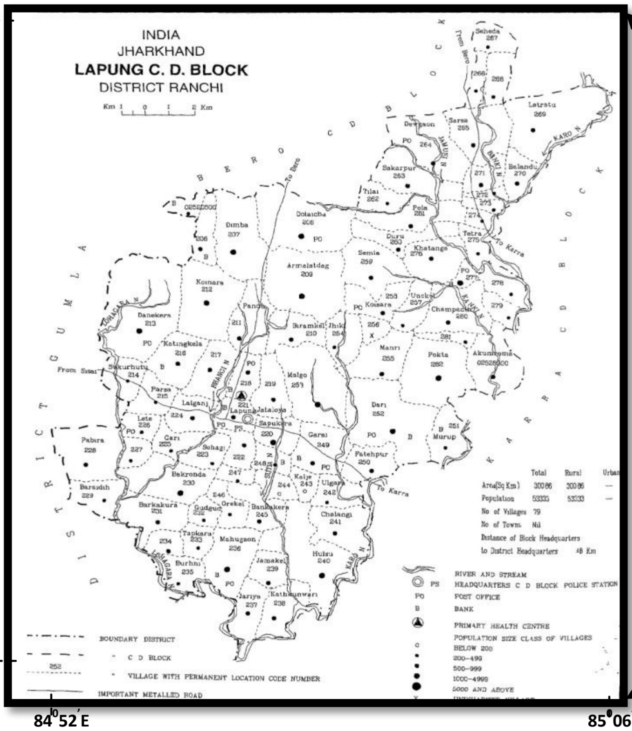

$23^{0}N$

$84^{0}52'E$ $85^{0}06'E$

RANCHI DISTRICT

$23^{0}43'N$

$22^{0}52'N$

$84^{0}52'E$ $85^{0}53'E$

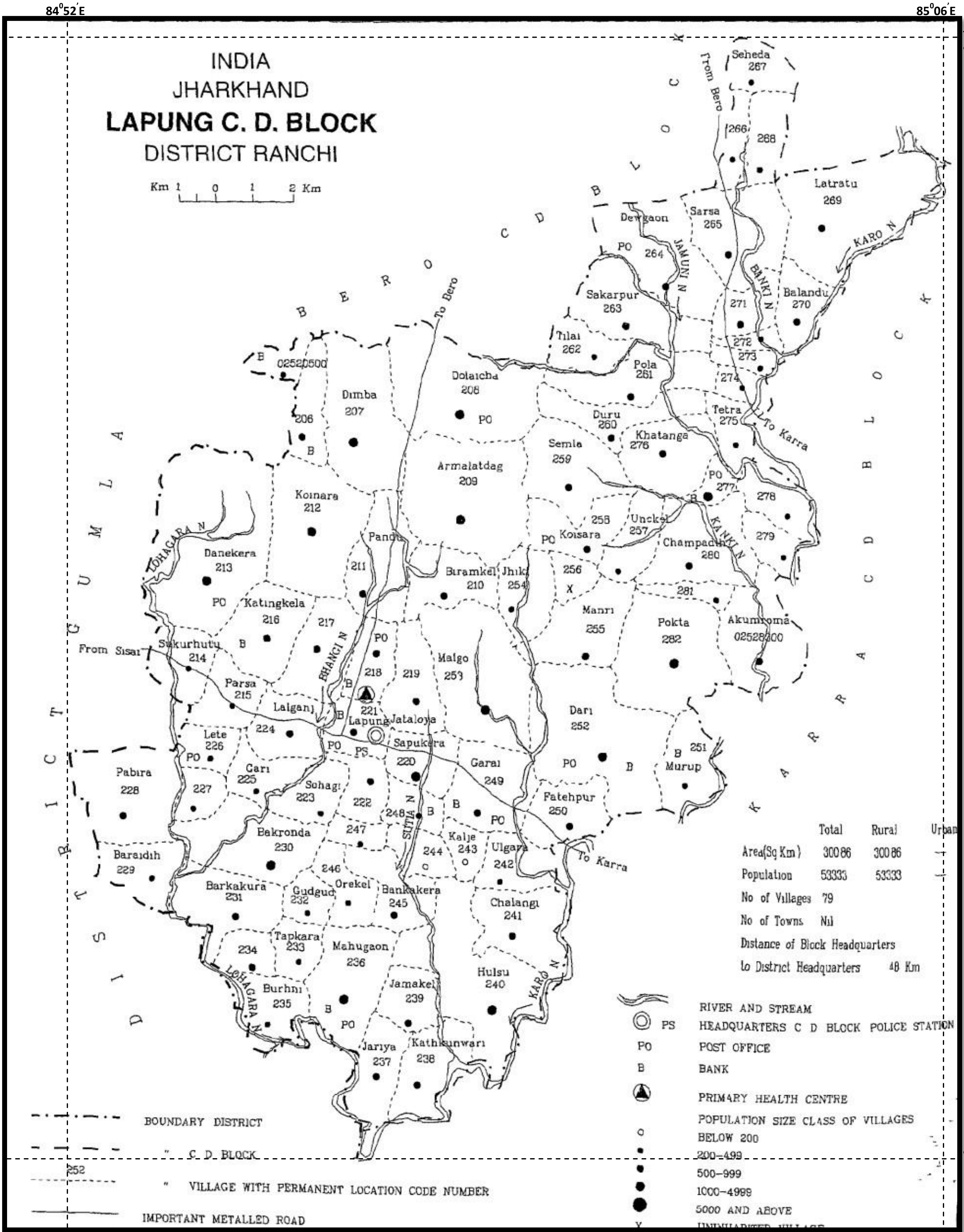
84°52′E
85°06′E
23°15′N
23°N
INDIA
JHARKHAND
LAPUNG C. D. BLOCK
DISTRICT RANCHI
Km 1 0 1 2 Km
BERO C D BLOCK
DISTRICT GUMLA
KARRA C D BLOCK
From Bero
To Bero
To Karra
From Sisai
LOHAGARA N
BHANGI N
SUTIA N
KARO N
JAMUNI N
BANKI N
KANKI N
Seheda 267
266
268
Latratu 269
Dewgaon
Sarsa 265
264
Sakarpur 263
271
Balandu 270
Tilai 262
272
273
Pola 261
274
0252Q500
Dimba 207
Dolaicha 208
206
Duru 260
Tetra 275
Khatanga 276
Semla 259
Armalatdag 209
Koinara 212
277
278
258
Unckel 257
Koisara
279
Pandu
Champadih 280
Danekera 213
211
Biramkel 210
Jhik 254
256
281
Katingkela 216
217
Manri 255
Pokta 282
Akumroma 02528300
Sukurhutu 214
Malgo 253
218
219
Parsa 215
Laiganj
221
Lapung
Jataloya
Dari 252
251
Murup
Lete 226
224
Sapukera
220
Garai 249
Pabira 228
Gari 225
Sohagi 223
222
227
248
Fatehpur 250
Bakronda 230
247
Kalje 243
Ulgara 242
244
Baraidih 229
246
Orekel
Barkakura 231
Gudgud 232
Bankakera 245
Chalangi 241
Tapkara 233
234
Mahugaon 236
Hulsu 240
Burhni 235
Jamakel 239
Jariya 237
Kathkunwari 238
PO
PS
B
X
Total
Rural
Urban
Area (Sq Km) 300.86 300.86 -
Population 53333 53333 -
No of Villages 79
No of Towns Nil
Distance of Block Headquarters
to District Headquarters 48 Km
RIVER AND STREAM
PS HEADQUARTERS C D BLOCK POLICE STATION
PO POST OFFICE
B BANK
PRIMARY HEALTH CENTRE
POPULATION SIZE CLASS OF VILLAGES
BELOW 200
200–499
500–999
1000–4999
5000 AND ABOVE
UNINHABITED VILLAGE
BOUNDARY DISTRICT
" C D BLOCK
252 " VILLAGE WITH PERMANENT LOCATION CODE NUMBER
IMPORTANT METALLED ROAD

लापुँग प्रखण्ड 30085 हेक्टेअर में फैला हुआ है। प्रखण्ड के कुल क्षेत्रफल का 12.21 प्रतिशत (3674.9 हेक्टेअर) वन भूमि के अन्तर्गत आता है। यहाँ कुल 19928 हेक्टेअर क्षेत्र में कृषि की जाती है, जो कुल भूमि का 66.24 प्रतिशत है। कुल कृषित भूमि का 86.33 प्रतिशत (17204 हेक्टेअर) असिंचित तथा 13.66 प्रतिशत (2724 हेक्टेअर) सिंचित है। लगभग 2387 हेक्टेअर भूमि कृषि योग्य व्यर्थ भूमि के अन्तर्गत आता है तथा 4095 हेक्टेअर भूमि गैर कृषि योग्य भूमि वर्ग में आता है। (District Census Handbook, 2001, Ranchi District)

लापुँग प्रखण्ड में 11 पंचायतें तथा 79 गाँव है जिसमें से एक अ–आवासित है। 2011 की जनगणना के अनुसार लापुँग प्रखण्ड की कुल जनसंख्या 63053 थी। लापुँग प्रखण्ड की शत प्रतिशत आबादी ग्रामीण श्रेणी में आती है। प्रखण्ड की कुल आबादी का 3.72 प्रतिशत अनुसूचित जाति तथा 74.22 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति हैं। साक्षरता दर 50 प्रतिशत पाया जाता है तथा लिंगानुपात 1013 महिला प्रति 1000 पुरूष है जबकि बाल लिंगानुपात 965 है।

ख) अध्ययन इकाई:– इस शोध कार्य के लिए लापुँग प्रखण्ड को अध्ययन इकाई बनाया जाएगा। लापुँग प्रखण्ड में 11 पंचायत और गांवों की संख्या 79 है जिनका अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर किया जाएगा। प्राथमिक आंकड़ों को एकत्र करने हेतु प्रतिदर्श गांवों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा प्रत्येक पंचायत से 2–2 किया जाएगा।

ग) सूचनादाता का चयन:– शोधकर्ता प्राथमिक आकड़ों को एकत्र करने हेतु यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा चिन्हित गांवों के कृषक एवं गैर–कृषक वर्ग के परिवारों का चयन सूचनादाताओं के रूप में करेगें एवं विविध विधियों द्वारा आंकड़ो का निरूपण किया जाएगा। द्वितीयक आंकड़ों को एकत्र करने हेतु विभिन्न मुद्रित माध्यमों को स्त्रोत के रूप में अध्ययन किया जाएगा। साथ ही सूचनाओं के संग्रहण हेतु पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों का सहयोग भी अपेक्षित होगा।

घ) प्रतिदर्श आकार:– प्रतिदर्श अध्ययन में समग्र की समस्त इकाइयों का अलग–अलगग अध्ययन नहीं किया जाता अपितु केवल कुछ छाँटी गई प्रतिनिधि इकाइयों के गहन अध्ययन द्वारा समस्त समग्र के लिए निष्कर्ष प्राप्त किये जाते हैं। अनुसंधान कार्यों में प्रतिदर्श चयन का महत्वपूर्ण स्थान है। इस विधि के प्रयोग से न केवल समय व धन की बचत होती है वरन् अध्ययन की जाने

वाली इकाइयों की संख्या में कमी हो जाने से अनुसंधान कार्य अपेक्षाकृत सरल हो जाता है। प्राथमिक आंकड़ों के एकत्रण हेतु शोधकर्ता द्वारा प्रतिदर्श गांवों में 10–10 परिवारों का चयन प्रतिदर्श आकार के रूप में यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया जाएगा।

ङ) आकड़ा सग्रहण की युक्ति:- प्राथमिक आकड़ों का सग्रहण विविध विधियों जैसे व्यक्तिगत प्रेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली आदि द्वारा प्रतिदर्श परिवारों से किया जाएगा। वहीं द्वितीयक आकड़ों का सग्रहण विभिन्न प्रकाशित एवं अप्रकाशित स्त्रोतों द्वारा किया जाएगा।

6. सम्भावित अध्यायः-

परिचय

प्रथम अध्यायः– भौगोलिक पृष्टभूमि

द्वितीय अध्यायः– ग्रामीण विकास एवं सामाजिक–आर्थिक तत्वों का प्रभाव

तृतीय अध्यायः– ग्रामीण विकास में अवस्थापनात्मक तत्वों की भूमिका

चतुर्थ अध्यायः– निर्धनता उन्मूलन एवं महिला सशक्तिकरण में ग्रामीण विकास का महत्व

पंचम अध्यायः– ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन

षष्टम अध्यायः– प्रतिदर्श गाँवों का अध्ययन

सप्तम अध्यायः– समस्याएँ एवं सुझाव

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

परिशिष्ट

7. आंकड़ों के एकत्रीकरण की तकनीक :-

प्रस्तुत शोध प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों पर आधारित होगा। आँकड़ों से तात्पर्य ऐसी संख्याओं से है जो यथार्थ विश्व के मापन को प्रदर्शित करती है। साथ ही प्राप्त आँकड़ों के प्रस्तुतीकरण के लिए विभिन्न सांखिकीय विधियों का प्रयोग किया जाएगा। इस शोध हेतु आवश्यक ऑकड़ों को संग्रहित निम्न स्त्रोतों से की जाएगीः–

- प्राथमिक आंकडों के संग्रहण हेतु व्यक्तिगत प्रेक्षण के साथ ही यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि का प्रयोग कर चुने गए सूचनादाताओ से साक्षात्कार, प्रश्नावली, अनुसूची आदि विधियों द्वारा किया जाएगा।

- द्वितीयक आंकड़ों का संग्रहण विभिन्न प्रकाशित एवं अप्रकाशित स्त्रोतों के माध्यम से किया जाएगा जैसे– सरकारी प्रकाशन, अर्द्ध सरकारी प्रकाशन, निजी प्रकाशन, पत्र–पत्रिकाएँ, सरकारी अभिलेख, अर्द्ध सरकारी अभिलेख, निजी अभिलेख, आदि।

- आकड़ों के विश्लेषण हेतु विभिन्न सांख्यिकीय विधियों जैसे– माध्य, माध्यिका, माध्य विचलन, मानक विचलन, परास, सह–सम्बन्ध आदि विधियों का प्रयोग किया जाएगा। सांख्यिकी आंकड़ों के निरूपण हेतु विभिन्न आरेखीय विधियों का प्रयोग किया जाएगा।

- रिमोट सेंसिंग आदि तकनीकों की सहायता ली जाएगी।

8. अध्ययन का महत्वः-

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आजीविका का मुख्य साधन है। माहात्मा गाँधी ने कहा था कि भारत की वास्तविक प्रगति का तात्पर्य शहरी औद्योगिक केन्द्रों के विकास से नहीं, बल्कि मुख्य रूप से गाँवों के विकास से है। ग्रामीण विकास ही राष्ट्रीय विकास का केन्द्र है। प्रस्तुत शोध लापुँग प्रखण्ड में ग्रामीण विकास की वर्तमान स्थिति से अवगत कराएगा। प्रस्तुत शोध के महत्व को स्पष्ट करने वाले बिन्दु अधोलिखित हैः–

- इस शोध द्वारा लापुँग प्रखण्ड के भौगोलिक परिप्रेक्ष्य की जानकारी मिलेगी।
- बीते दशकों में आए आर्थिक, सामाजिक एवं जनांकिकीय परिवर्तनों का पता चल पाएगा।

- अवस्थापनात्मक तत्वों का ग्रामीण विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाने हेतु भी यह शोध महत्वपूर्ण है।
- ग्रामीण विकास हेतु चल रहे विभिन्न कार्यक्रमों का इस क्षेत्र के कृषि विकास, निर्धनता उन्मूलन, साक्षरता वृद्धि, महिला सशक्तिकरण, आदि सामाजिक–आर्थिक उत्थान में क्या प्रभाव पड़ा है उसकी वस्तुस्थिति स्पष्ट होगी।
- केन्द्रीय एवं राज्य स्तरीय सरकारी योजनाएं कहॉं तक सफल रहीं इसकी जानकारी मिलेगी।
- आर्थिक विकास पर कृषि की भूमिकाओं का पता चल पाएगा।
- कृषि और गैर–कृषि सेक्टरों में रोजगार के अवसरों का ज्ञान होगा।
- प्रस्तुत शोध भविष्य में किए जाने वाले कार्यों के लिए स्त्रोत का कार्य करेगी।

9. वर्तमान समय की समस्याओं एवं समाज के लिए इसकी आवश्यकता :–

मेरे द्वारा लापुँग प्रखण्ड के ग्रामीण विकास पर किए जाने वाले अनुसंधान का वर्तमान समय की समस्याओं और समाज की जरूरतों को देखते हुए अत्यधिक प्रासंगिक है जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुएँ निम्न हैं:–

- इस शोध द्वारा ग्रामीणों के गरीबी एवं निम्न जीवन स्तर के कारणों की पहचान की जा सकेगी और गरीबी को कम करने और आय व रोजगार के अवसरों को बढ़ाने वाले उपायों/समाधानों की खोज की जाएगी।
- लापुँग प्रखण्ड क्षेत्र में यह शोध कार्य कृषि की कमियों को उजागर कर, उत्पादकता बढ़ाने और कृषि में क्षेत्र की विशेषतानुरू नवाचार लाकर लाभ बढ़ाने में मदद कर सकता है।
- इस शोध कार्य का मुख्य ध्येय लापुँग प्रखण्ड के सामाजिक आर्थिक पिछड़ेपन का उजागर कर विभिन्न समाधानों को प्रस्तुत करना है जो इस क्षेत्र के सामाजिक उत्थान और आर्थिक प्रगति को गति दे।

10. वर्तमान ज्ञान में योगदान :–

ग्रामीण विकास, ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, पर्यावरणीय विकास पर केन्द्रित है। प्रस्तुत शोध कार्य कई माध्यमों से मौजूदा ज्ञान में योगदान कर सकता है जिनमें से कुछ निम्न हैं:–

- यह शोध कार्य लापुँग प्रखण्ड के विभिन्न समस्याओं को उजागर करेगा जिससे उसके समाधान के उपायों की खोज की जा सकेगी।
- यह अनुसंधान ग्रामीण विकास के लिए नई कार्यनीतियाँ विकसित करने में मदद कर सकता है जो मौजूदा रणनीतियों की तुलना में अधिक प्रभावी और कुशल हो।
- यह शोध मौजूदा ग्रामीण विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करेगा, सफल कार्यक्रमों की पहचान करेगा।

11. भविष्य के कार्य :-

सर्वप्रथम प्रस्तुत शोध कार्य में लापुँग प्रखण्ड की भौगोलिक पृष्ट्भूमि की व्याख्या की जाएगी। जिसमें प्रखण्ड की भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं को सम्मिलित किया जाएगा। ग्रामीण विकास को स्पष्ट करते हुए सामाजिक–आर्थिक तत्वों का ग्रामीण विकास पर प्रभावों का विश्लेषण किया जाना है। साथ ही ग्रामीण विकास के समन्वित कार्यक्रमों द्वारा निर्धनता उन्मूलन व महिला सशक्तिकरण की सम्भावनाओं को प्रस्तुत किया जाएगा। इतना ही नहीं विभिन्न ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का विश्लेषण और मूल्यांकन भी इस शोध का मुख्य ध्येय होगा तथा प्राप्त अध्ययनों विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किया जाएगा जिससे लापुँग प्रखण्ड के सामाजिक–आर्थिक विकास में योगदान मिल सके।

12. संदर्भ ग्रंथ :-

1. सिंह, कटार (2011) : ग्रामीण विकासः सिद्धांत, नीतियाँ एवं प्रबन्धन, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
2. सिंह, इकबाल (1986) : भारत में ग्रामीण विकास, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
3. सिंह, जिले (2016) : ग्रामीण विकास की चुन्नौतियाँ, विश्वभारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
4. पटेल, राजेश : ग्रामीण विकास की रूपरेखा, रावत

	(2014)	पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
5.	कुमार, विभू (2014)	: स्वतंत्र्योत्तर भारत में ग्रामीण विकास, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
6.	श्रीवास्तव, वी० के०, नन्देश्वर शर्मा एवं पी० आर० चौहान (2008)	: प्रादेशिक नियोजन और संतुलित विकास, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
7.	मौर्य, एस० डी० (2017)	: अधिवास भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
8.	तिवारी, राम कुमार (2013)	: झारखण्ड की रूपरेखा, शिवांगन पब्लिकेशन, राँची।
9.	सिंह, सुनील कुमार(2006)	: झारखण्ड की विकास यात्रा, क्राउन पब्लिकेशन, राँची।
10.	मुहम्मद, सुलेमान एवं दिनेश कुमार (2014–15)	: मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, जेनरल बुक एजेन्सी, अशोक राजपथ, चौहटा, पटना।

11. वार्षिक रिपोर्ट, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (2020–21)

12. District census handbook, Ranchi, (2001)

13. District census handbook, Ranchi, (2011)

वेब लिंकः–

- https://etrace.in
- https://www.censusindia.co.in
- https://desjharkhand.nic.in
- https://ranchi.nic.in
- https://www.onefivenine.com
- https://onlinemaps.surveyofindia.gov.in
- https://sodhganga.inflibnet.ac.in
- https://scotbuzz.org
- https://kisansahayata.com
- https://findmygov.in
- https://geolysis.com

13. Signature and apprval of supervisor:

To

The H.O.D.

University Department of Geography

Ranchi University, Ranchi.

Subject:- Request for Ph.D. Enrollment of Mr. Samir Kumar Nand.

Sir,

This is to inform you that Mr. Samir Kumar Nand wants to get enrolled under my supervision. The Topic of the research scholar is **"लापुँग प्रखण्ड में ग्रामीण विकास : एक भौगोलिक अध्ययन"** which is related with my field of interest. I agree to be supervisor of Mr. Samir Kumar Nand.

Thanking you

(Dr. G. K. Singh)

Assistant professor

University Department of Geography

Ranchi University, Ranchi